E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 01-11-2024
Accepted: 05-12-2024

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 3; Issue 1; 2025; Page No. 17-19

अमृत सरोवर मिशन से बढ़ता जल संवर्द्धन (उ0 प्र0 राज्य के जनपद बिजनौर के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. भावना वत्सल

असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल आर. एस. एम. (पी.जी.) कॉलेज, धामपुर, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.14622430

Corresponding Author: डॉ. भावना वत्सल

सारांश

वर्तमान में विश्व के अधिकांश देश पेयजल हेतु भीषण जल संकट का सामना कर रहे हैं। यूं तो पृथ्वी का दो–तिहाई क्षेत्र पानी से भरा है लेकिन पीने एवं उपयोगी जल की मात्रा लगभग 3 प्रतिशत ही है। प्रकृति के इस अनमोल संसाधन को हम लगातार अपनी लालसा और भौतिक आवश्यकताओं की भेंट चढ़ा रहे हैं जबकि भारत एक मानसूनी देश है। हम भारतीय प्रत्येक वर्ष वर्षा के रूप में जो शुद्ध जल की प्राप्ति होती है उसकी समुचित देखरेख एवं जागरूकता से इस अनमोल संसाधन को प्राप्त कर सकते हैं जितना हम खर्च कर कर रहे हैं उतना हम अपनी पृथ्वी को जल संचयन के द्वारा लौटा सकते हैं। भारत सरकार के अमृत सरोवर मिशन इसी प्रकार का मिशन है जिसके द्वारा भारत सरकार की जल संरक्षण योजना से जल संवर्द्धन तेजी से हो रहा है। प्रस्तुत शोध–पत्र में भारत सरकार की इस योजना से उत्तर प्रदेश राज्य के बिजनौर जनपद में किस प्रकार से जल संरक्षण में वृद्धि हुई है, इस योजना में कितना कार्य हो गया है तथा इसके क्या प्रभाव हो रहे हैं, को प्रस्तुत करने का कार्य किया गया है।

मूल शब्दः जल संरक्षण, अमृत सरोवर, पेयजल, जल संवर्द्धन

प्रस्तावना

मनुष्य के लिए जल सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों में से एक है। यह सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रकृति की ओर से एक अमूल्य उपहार है। पृथ्वी का दो–तिहाई क्षेत्र पानी से भरा है लेकिन उपलब्ध पेयजल बहुत ही न्यून मात्रा में है। आज विश्व के अधिकतर देश पेयजल हेतु भीषण जल संकट का सामना कर रहे हैं। अनेक देशों में समुद्री जल को परिष्कृत करते पेयजल और मनुष्य के आवश्यकता हेतु तकनीकी एवं शोध का प्रयोग किया जा रहा है। हम भारतीयों को प्रत्येक वर्ष वर्षा के रूप में शुद्ध जल की प्राप्ति होती है परन्तु समुचित देखरेख के अभाव, लापरवाही, अज्ञानता के कारण यह जल नदियों, नालो से अपशिष्ट होकर समुद्र में मिल जाता है। यहां यह बताना आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को यह पता है कि जल की मात्रा शनैः–शनैः न्यून हो रही है, पेयजल और मनुष्य के प्रयोग हेतु जल निरन्तर कम हो रहा है परन्तु उसका दुरुपयोग आंखे बन्द कर ऐसे कर रहे हैं जैसे कि यह कभी समाप्त न होने वाली वस्तु है। भारत जैसे बहु जनसंख्या वाले देश में कोई भी सरकार द्वारा किये जा रहे पेयजल आपूर्ति पर निर्भर नहीं रह सकते है। प्रत्येक व्यक्ति और समाज को अनवरत अपने–अपने हिस्से के प्रयास करने होंगे। जब तक समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्वयं से जल के सही उपयोग के लिए प्रयास नहीं करेगा चाहे जितने भी जागरूकता अभियान, गोष्ठियां, सेमिनार, रैलियां होती रहे, जमीनी स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। जहां देश के बड़े महानगरों में भूजल समाप्त प्रायः ही है और वे अधिकतर निकटवर्ती नदियों के जल पर निर्भर हैं। श्रेणी–2 और श्रेणी–3 के शहरी क्षेत्रों में भी भूगर्भीय जलदोहन तेजी से होने के कारण वहां पर भी भूजल तेजी से समाप्त हो रहा है।

देश की बढ़ती जनसंख्या के कारण भूगर्भीय जल और पेयजल पर दबाब तेजी से बढ़ रहा है और पेयजल आपूर्ति में बाधा उत्पन्न हो जाती है। विशेषतः गर्मियों में देश के प्रत्येक क्षेत्र में पेयजल आपूर्ति बाधित हो जाती है। उदाहरण के लिए वर्ष 2024 में झीलो का शहर कहलाने वाले महानगर बैंगलुरु में भूमिगत जल समाप्त हो गया और वहां पर पेयजल आपूर्ति पूर्णरूपेण बाधित हो गयी थी। इसका मुख्य कारण वर्षा के जल का संग्रहण व सदुपयोग न होना प्रमुख है। यदि हम इसी प्रकार से अनदेखी करते रहेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब देश के अधिकांश हिस्सों में खाद्य सामग्री से भी अधिक महंगा पेयजल हो जायेगा। प्रत्येक परिवार को पेयजल हेतु अलग से बजट व्यय करना पड़ेगा।

इस दिशा में वर्तमान भारत सरकार ने अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं। जहां सरकार पेयजल हेतु गांव–गांव 'हर घर नल–

हर घर जल' योजना के अन्तर्गत गांवों–गांवों पानी की टंकियों का निर्माण कराया जा रहा है और पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु प्रयास किये जा रहे है, वहीं, देश के प्रत्येक गांव में जल संवर्द्धन हेतु मिशन अमृत सरोवर जैसी योजना चला रही हैं। इसके अलावा सरकार द्वारा अन्य प्रयास भी किये जा रहे हैं जैसे सोकपिट निर्माण, रेन वाटर हार्वेस्टिंग को बढ़ावा देना आदि।

अमृत सरोवर योजना के उद्देश्य

भारत सरकार द्वारा 24 अप्रैल 2022 को मिशन अमृत सरोवर योजना को शुरू किया गया था जिसके अन्तर्गत भारत के प्रत्येक जनपद में 75 अमृत सरोवर (तालाब) को विकसित/पुनर्जीवित करने का लक्ष्य रखा गया है। इस मिशन के अन्तर्गत सतही और भूमिगत दोनो जगहों पर पानी की उपलब्धता बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया। इस योजना का लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों में जल संकट की समस्या को दूर करने के लिए प्रत्येक जिले में कम से कम 75 अमृत सरोवरों का निर्माण/पुनरूद्धार करना है। प्रत्येक अमृत सरोवर का तालाब क्षेत्र न्यूनतम 1 एकड़ (0.4 हेक्टेयर) होगा जिसमें लगभग 1000 घन मीटर की जल धारण क्षमता होगी जिससे स्थानीय स्तर पर जल स्थिरता सुनिश्चित की जा सके। इस मिशन के अन्तर्गत आठ केन्द्रीय मंत्रालयों/विभागों का सक्रिय योगदान सुनिश्चित किया गया है। इसमें ग्रामीण विकास विभाग, भूमि संसाधन विभाग, पेयजल और स्वच्छता विभाग, जल संसाधन विभाग, पंचायती राज मंत्रालय, वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, रेल मंत्रालय, सड़क परिवहन तथा राजमार्ग मंत्रालय शामिल है। भास्कराचार्य राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुप्रयोग और भू–सूचना विज्ञान संस्थान को मिशन का तकनीकी भागीदार बनाया गया है।

शोध–पत्र का उद्देश्य

उपरोक्त संदर्भ में अमृत सरोवर मिशन योजना के अन्तर्गत वर्तमान में इस योजना से जनपद बिजनौर में किये जा रहे कार्यो की प्रगति देखना है। इस योजना से जनपद बिजनौर में भूगर्भीय जल में हो रहे लाभ और भूजल स्तर में हो रहे परिवर्तन की जानकारी प्राप्त करना है।

आंकड़ो का संकलन

अमृत सरोवर मिशन की वर्तमान स्थिति जानने के लिए मुख्यतः इसकी वेबसाइट से ताजा आंकड़े लिये गये हैं साथ ही जनपद बिजनौर के प्रत्येक विकासखण्ड में अमृत सरोवर योजना के अन्तर्गत किये जा रहे कार्यो का अपडेट और वहां पर जल स्तर सम्बन्धी आंकड़ों का संकलन भी किया गया है।

अमृत सरोवर मिशन की तुलनात्मक स्थिति –

तालिका 1: भारत में वर्तमान में चल रहे अमृत सरोवर मिशन की स्थिति (दिनांक 20.12.2024 तक)

	कुल संभावित स्थल	स्थल जिन पर कार्य शुरू किया गया	पूर्ण कार्य स्थल
भारत में	109787	85908	68843
उ0प्र0 में	24461	21033	16630
बिजनौर जनपद में	499	410	314

स्रोत – www.amritsarovar.gov.in से संकलित।

जनपद बिजनौर में तहसीलवार चल रहे अमृत सरोवर मिशन की स्थिति

जनपद बिजनौर में भी सभी तहसील और ब्लॉक स्तर पर तेजी से इस योजना के अन्तर्गत कार्य चल रहा है। वर्तमान में इस मिशन के अन्तर्गत तहसीलवार किये जा रहे कार्यो की स्थिति तालिका–2 में दर्शायी गयी है।

तलिका 2: जनपद बिजनौर में तहसीलवार चल रहे अमृत सरोवर मिशन की स्थिति (दिनांक 20.12.2024 तक)

	कुल संभावित स्थल	स्थल जिन पर कार्य शुरू किया गया	पूर्ण कार्य स्थल
बिजनौर	73	62	44
चांदपुर	102	77	66
धामपुर	189	147	130
नगीना	71	70	35
नजीबाबाद	64	54	39
योग	499	410	314

स्रोत–www.amritsarovar.gov.in से संकलित।

जनपद बिजनौर में तेजी से अमृत सरोवर मिशन के अन्तर्गत 499 संभावित स्थलों का चयन किया गया है जिसमें से 410 स्थलों पर कार्य शुरू हो चुका है और 314 सरोवरों का निर्माण फरवरी 2024 तक पूर्ण कर लिया गया है।

तालिका 3: जनपद बिजनौर में विकासखण्डवार बन रहे अमृत सरोवर

विकासखण्ड	संख्या
अफजलगढ़	29
धामपुर	48
हल्दौर	40
जलीलपुर	26
किरतपुर	07
कोतवाली	29
मौ0पुर देवमल	23
नजीबाबाद	23
नहटौर	29
नूरपुर	30
स्योहारा	30
योग	314

स्रोत – www.amritsarovar.gov.in

विकासखण्डवार भूगर्भीय जल संवर्द्धन

जनपद बिजनौर में पिछले कुछ वर्षो में गर्मियों में डार्क जोन की संख्या चार हो गयी थी। इसका प्रमुख कारण अनियंत्रित तरीके से जल दोहन, गन्ने की अंधाधुंध खेती, पानी की व्यावसायिक दुरूपयोग ही है। गांवों में तालाबों जनपद बिजनौर में भूगर्भीय जल की विकासखण्डवार स्थिति निम्न तालिका– 3 में प्रदर्शित है जिससे स्पष्ट होता है कि वर्ष 2022 से निरन्तर ग्रामीण क्षेत्रों में सरोवर पुनरुद्धार/निर्माण से पानी की गहराई घट रही है अर्थात भूगर्भीय जल की स्थिति निरन्तर बेहतर हो रही है।

तालिका 4: जनपद बिजनौर में भूगर्भीय जल की विकासखण्डवार स्थिति

विकास खण्ड	वर्षवार पानी की गहराई (मी0 में)		
	वर्ष 2021	वर्ष 2022	वर्ष 2023
अफजलगढ़	3.42	2.71	3.54
धामपुर	7.59	6.13	6.10
हल्दौर	9.77	9.60	7.85
जलीलपुर	10.12	9.23	7.27
किरतपुर	11.14	10.22	9.01
कोतवाली	8.04	6.60	6.24
मौ0पुर देवमल	9.44	9.13	9.27
नजीबाबाद	10.81	8.63	8.41
नहटौर	8.82	8.80	7.76
नूरपुर	8.80	7.63	6.14
स्योहारा	6.87	6.38	5.55
औसत	8.80	7.79	7.01

स्रोत – विकासखण्डवार स्वयं आंकलित आंकड़ों के आधार पर।

भूजल प्रबंधन का जनपद में अच्छा असर दिखाई पड़ रहा है। जनपद में 314 अमृत सरोवर पूर्ण कर लिये गये जिससे जिले में भूगर्भ जलस्तर में सुधार हो रहा है। वाटर हार्वेस्टिंग, पानी की बर्बादी रोकने में काफी कारगर साबित हुई है। जनपद बिजनौर के चार ब्लॉक नूरपुर, नहटौर, स्योहारा और जलीलपुर जो पूर्व में डार्क जोन में घोषित हो गये थे उनमें से वर्तमान में तीन नूरपुर, नहटौर और स्योहारा को सामान्य जोन में घोषित कर दिया गया है केवल जलीलपुर ब्लॉक ही डार्क जोन में है।

हमारे देश में औसतन 1170 मिमी वर्षा होती है। देश में लगभग 5.80 लाख गांव है। यदि प्रत्येक गांव में अमृत सरोवर मिशन योजना के अन्तर्गत एक तालाब का निर्माण कर लिया जाये और यदि औसत वर्षा का आधा जल भी हम अपने तालाबों, पोखरो, कुआं आदि में संकलित कर ले तो इन सरोवरों में ही कई लाख लीटर पानी एकत्र किया जा सकता है। जो देश की आवश्यकता को पूरा करने में सहायक होगा, साथ ही जमीन में पर्याप्त नमी के कारण सिंचाई जल कम लगेगा और इससे कृषि के लिए अनिवार्य प्राकृतिक लवण आदि भी मिलते रहेंगे।

निष्कर्ष

'अमृत सरोवर मिशन' योजना में न केवल वर्षा के जल का एकत्रीकरण हो रहा है बल्कि गांवों में उनका स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत भी विकास हो रहा है। तालाबों के किनारे वृक्षारोपण किया जा रहा है, उनके आस–पास युवाओं के खेलने–कूदने हेतु पार्क की व्यवस्था की जा रही है, स्थानीय निवासियों के घूमने हेतु स्वच्छ पट्टी का विकास किया जा रहा है। भूजल स्तर निरन्तर वृद्धि की ओर अग्रसर है। सरकार द्वारा शुरू की गयी 'हर घर नल–हर घर जल योजना' जो अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में है, के प्रयोग से जहां जल का दुरूपयोग घटेगा वहीं प्रत्येक ग्रामीण को भी स्वच्छ जल की प्राप्ति का उद्देश्य प्राप्त होगा। प्रस्तुत अध्ययन में यह स्पष्ट है कि अमृत सरोवर मिशन योजना से बिजनौर जनपद के विकास खण्डों में स्थित ग्रामीण क्षेत्रों में तेजी से जलस्तर बढ़ रहा है। यह एक सकारात्मक पहल है। इस योजना पर निरन्तर निगरानी की सरकार और समाज द्वारा आवश्यकता है।

सन्दर्भ

1. पर्यावरण भूगोल– डॉ. सविन्द्र सिंह, प्रयाग पुस्तक भवन, प्रयागराज
2. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी, संजीव शर्मा, गोल्डन पीकोक प्रकाशन, नई दिल्ली
3. ''आपदा प्रबंधन''– कितने तैयार हैं हम, योजना अंक जून 2009
4. ''योजना'', अंक सितम्बर, 2007
5. दैनिक जागरण समाचार पत्र
6. विभिन्न विकास खण्ड से प्राप्त आंकड़े
7. www.amritsarovar.gov.in
8. www.rural.nic.in

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.